थिसलुनिका नगरक मण्डली कें पौलुसक दोसर पत्र

1 पौलुस, सिलास* आ तिमुथियुसक
दिस सँ,
अपना सभक पिता परमेश्वर और
प्रभु यीशु मसीहक मण्डलीक नाम जे
थिसलुनिका नगर मे अछि, ई पत्र—
2 पिता परमेश्वर आ प्रभु यीशु मसीह
अहाँ सभ पर कृपा करथि आ अहाँ सभ
कें शान्ति देथि।

कष्टो मे थिसलुनिकी सभ विश्वास मे स्थिर

3 यौ भाइ लोकनि, अहाँ सभक लेल
सदिखन परमेश्वर कें धन्यवाद देनाइ
हमरा सभक कर्तव्य अछि। ई बात उचितो
अछि, कारण अहाँ सभक विश्वास बहुत
नीक सँ बढ़ि रहल अछि, और अहाँ सभ
मे सँ प्रत्येक गोटे कें जे एक-दोसराक लेल
प्रेम अछि, तकर वृद्धि भऽ रहल अछि।
4 एहि लेल परमेश्वरक आन मण्डली
सभक बीच हम सभ अहाँ सभक बड़ाइ
करैत छी जे, जतेक कष्ट आ अत्याचार
अहाँ सभ सहि रहल छी ताहि सभ मे सेहो
अहाँ सभक धैर्य आ विश्वास स्थिर रहैत
अछि।
5 ई सभ एहि बातक प्रमाण अछि जे
परमेश्वरक न्याय उचित होइत छनि;
आ एकर फल ई अछि जे अहाँ सभ
परमेश्वरक राज्यक योग्य ठहरब, जाहि
राज्यक लेल अहाँ सभ एखन दुःख सहि
रहल छी। 6 परमेश्वर न्यायी छथि—ओ
अहाँ सभ कें कष्ट देनिहार सभ कें कष्ट
देथिन, 7 और अहाँ सभ कें, जे कष्ट
पौनिहार छी, आ हमरो सभ कें, ओ
आराम देताह। ओ ई सभ तहिया करताह
जहिया प्रभु यीशु अपन सामर्थी स्वर्गदूत
सभक संग धधकैत आगि मे प्रगट
होइत स्वर्ग सँ औताह। 8 ओहि समय मे
ओ तकरा सभ कें दण्ड देथिन जे सभ
परमेश्वर कें स्वीकार नहि कयलक आ
अपना सभक प्रभु यीशुक शुभ समाचार
कें नहि मानलक। 9 एहन लोक सभ प्रभुक
उपस्थिति आ हुनकर शक्तिक प्रताप सँ
दूर कयल जायत और अनन्त कालीन
विनाशक दण्ड पाओत। 10 ई बात ओहि

1:1 मूल मे “सिलवानुस”, जे “सिलास” नामक एक रूप अछि।

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT

दिन होयत जहिया प्रभु यीशु अपन पवित्र लोकक बीच अपन महिमाक गुणगान स्वीकार करबाक हेतु औताह, और ताहि सभ लोकक लेल अत्यन्त खुशी और आश्चर्यक कारण बनबाक हेतु औताह, जे सभ हुनका पर विश्वास कयने अछि। और ओहि मे अहूँ सभ रहब, कारण अहाँ सभ कें हम सभ हुनका बारे मे जे बात सुनौलहुँ ताहि पर अहाँ सभ विश्वास कयलहुँ।

थिसलुनिकी सभक लेल प्रार्थना

11 ई सभ बात ध्यान मे राखि, हम सभ
लगातार अहाँ सभक लेल प्रार्थना करैत
छी जे अपना सभक परमेश्वर अहाँ सभ
कें ताहि बातक योग्य बुझथि जकरा
लेल ओ अहाँ सभ कें बजौलनि। हुनका
सँ इहो प्रार्थना करैत छी जे ओ अपना
सामर्थ्य सँ भलाइ करबाक अहाँ सभक
प्रत्येक इच्छा कें पूरा करथि आ विश्वास
सँ प्रेरित प्रत्येक काज कें सम्पन्न करऽ मे
अहाँ सभक मदति करथि। **12**किएक तँ
एहि तरहें अपना सभक परमेश्वर आ प्रभु
यीशु मसीहक कृपाक कारणें अहाँ सभ
द्वारा अपना सभक प्रभु यीशु कें आदर-
प्रशंसा प्राप्त होयतनि, आ हुनका द्वारा
अहाँ सभ कें आदर-प्रशंसा प्राप्त होयत।

प्रभुक अयबाक दिनक सम्बन्ध मे धोखा नहि खाउ

2 यौ भाइ लोकनि, अपना सभक प्रभु
यीशु मसीह जे फेर औताह, ताहि
विषय मे, आ अपना सभ जे हुनका लग
जमा होयब, ताहि विषय मे हम सभ
अहाँ सभ कें कहि रहल छी— **2**केओ
जँ ईश्वरीय सम्बाद पयबाक, वा हमरा
सभक दिस सँ कोनो सूचना अथवा पत्र
प्राप्त करबाक दावा करय जाहि मे ई
कहल गेल होअय जे प्रभुक अयबाक
दिन आबि चुकल अछि, तँ ताहि सँ
अहाँ सभ तुरत्ते भ्रम मे नहि पड़ि जाउ
आ ने घबड़ाउ। **3**केओ अहाँ सभ कें
कोनो तरहें धोखा नहि देबऽ पाबओ,
कारण ओ दिन ताबत धरि नहि आओत
जाबत धरि परमेश्वरक विरोध मे
“महा-विद्रोह” नहि भऽ जायत और ओ
“अधर्मक पुरुष”, जकर विनाश निश्चित
अछि, से प्रगट नहि भऽ जायत। **4**ओ
ईश्वर कहौनिहार अथवा पूज्य मानल
जाय वला प्रत्येक वस्तुक विरोध करैत
अपना कें ओहि सभ सँ एतेक महान्
ठहराओत जे परमेश्वरक मन्दिर मे
विराजमान भऽ अपना कें ईश्वर घोषित
करत।

5की अहाँ सभ कें याद नहि अछि जे
अहाँ सभक बीच रहैत हम ई बात सभ
बुझबैत रहैत छलहुँ? **6**अहाँ सभ कें
बुझल अछि जे कोन सामर्थ्य ओकरा
एखन रोकने छैक जाहि सँ ओ निर्धारित
समय पर प्रगट होअय। **7**अधर्मक गुप्त
शक्ति एखनो अपन काज शुरू कऽ देने
अछि, मुदा जाबत धरि ओकरा रोकनिहार
कें हटाओल नहि जायत ताबत धरि ओ
ओकरा रोकने रहत। **8**तकरबाद ओ
अधर्मी पुरुष प्रगट कयल जायत जकरा
प्रभु यीशु अपन मुँहक फूक सँ मारि
देथिन। प्रभु यीशु महिमा मे आबि कऽ
ओकर सर्वनाश कऽ देथिन।

9ओ अधर्मी पुरुष शैतानक सामर्थ्य
सँ परिपूर्ण भऽ कऽ आओत। ओ सभ
तरहक शक्तिशाली आश्चर्यपूर्ण चिन्ह
आ छल-कपट वला चमत्कार देखाओत,

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT

10 और नाश भेनिहार लोक सभ कें हर
प्रकारक अधर्मक माध्यम सँ धोखा दऽ
कऽ फँसाओत। ओ सभ एहि लेल नाश
भेनिहार अछि जे ओ सभ ओहि सत्य सँ
प्रेम नहि करऽ चाहलक जे सत्य ओकरा
सभ कें बँचा सकैत छलैक। 11 एही लेल
परमेश्वर ओकरा सभ मे भ्रमपूर्ण मनोभाव
उत्पन्न करैत छथिन जाहि सँ ओ सभ
झूठक विश्वास करय। 12 एहि तरहें जे
केओ सत्य पर विश्वास नहि कयलक आ
अधर्म मे मग्न रहल से सभ दोषी ठहरि
कऽ दण्डित कयल जायत।

प्रभुक शिक्षा मे दृढ़ बनल रहू

13 यौ भाइ लोकनि, प्रभुक प्रिय लोक,
अहाँ सभक लेल हमरा सभ कें सदिखन
परमेश्वर कें धन्यवाद देबाक अछि,
कारण, परमेश्वर शुरुए सँ अहाँ सभ
कें एहि उद्देश्य सँ चुनलनि जे अहाँ सभ
हुनकर आत्माक काज द्वारा पवित्र भऽ
कऽ और सत्य पर विश्वास कऽ कऽ
उद्धार प्राप्त करी। 14 जे शुभ समाचार
हम सभ अहाँ सभ कें सुनौलहुँ ताहि द्वारा
परमेश्वर अहाँ सभ कें एहि उद्धारक लेल
बजौलनि, जाहि सँ अहाँ सभ अपना
सभक प्रभु यीशु मसीहक महिमा मे
सहभागी बनी। 15 तें यौ भाइ लोकनि,
अपना विश्वास मे स्थिर रहू आ ओहि
शिक्षा मे दृढ़ बनल रहू जे अहाँ सभ कें
हमरा सभ सँ मौखिक रूप सँ वा पत्र द्वारा
भेटल अछि।

16 आब स्वयं अपना सभक प्रभु यीशु
मसीह और अपना सभक पिता परमेश्वर
जे अपना सभ सँ प्रेम कयलनि आ अपना
कृपा सँ अनन्त कालीन उत्साह आ
अटल आशा देने छथि, 17 से अहाँ सभ कें
प्रोत्साहित करैत रहथि और सभ प्रकारक
नीक काज करबाक लेल आ नीक बात
बजबाक लेल बल दैत रहथि।

प्रार्थनाक लेल पौलुसक विनती

3 यौ भाइ लोकनि, अन्त मे ई—हमरा
सभक लेल प्रार्थना करैत रहू
जे, प्रभुक वचन जल्दी सँ पसरय आ
जहिना अहाँ सभक ओतऽ भेल, तहिना
ओ दोसरो-दोसरो ठाम आदरक संग
स्वीकार कयल जाय। 2 और ई प्रार्थना
करू जे भ्रष्ट आ दुष्ट लोक सभ सँ हमरा
सभक रक्षा होइत रहय, कारण, सभ
लोक वचन सुनि विश्वास नहि करैत
अछि। 3 मुदा प्रभु विश्वासयोग्य छथि।
ओ अहाँ सभ कें दृढ़ बनौने रहताह आ
दुष्ट शैतान सँ अहाँ सभ कें सुरक्षित
रखताह। 4 प्रभु पर भरोसा राखि हमरा
सभ कें पूरा विश्वास अछि जे अहाँ सभ
हमरा सभक आज्ञाक पालन कऽ रहल
छी आ आगाँ सेहो करैत रहब। 5 प्रभु
अहाँ सभक हृदय मे परमेश्वरक प्रेमक
आ मसीहक धैर्यक अनुभव बढ़बथि।

आलसी सभक लेल चेतावनी

6 यौ भाइ लोकनि, आब हम सभ
प्रभु यीशु मसीहक नाम सँ अहाँ सभ कें
आज्ञा दैत छी जे अहाँ सभ ओहन सभ
भाय सँ दूर रहू जे सभ आलसी अछि
आ ओहि शिक्षाक अनुसार नहि चलैत
अछि जे हमरा सभ द्वारा अहाँ सभ कें
देल गेल। 7 अहाँ सभ तँ अपने जनैत छी
जे, हम सभ जेना करैत छी, तेना अहूँ
सभ कें करबाक चाही—हम सभ अहाँ
सभक बीच रहैत आलसी बनि कऽ नहि
रहलहुँ। 8 हम सभ बिनु मोल चुका कऽ

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT

किनको रोटी नहि खयलहुँ, बल्कि दिन-
राति कष्ट सहैत आ परिश्रम करैत खटैत
रहलहुँ जाहि सँ अहाँ सभ मे सँ किनको
पर भार नहि बनि जाइ। 9ई बात नहि,
जे हमरा सभ कैं अहाँ सभ सँ सहयोग
पयबाक अधिकार नहि छल, बल्कि
बात ई जे, हम सभ अहाँ सभक लेल
उदाहरण बनऽ चाहलहुँ जाहि सँ अहूँ
सभ तहिना करी। 10अहाँ सभक संग
रहैत हम सभ अहाँ सभ कैं ई आज्ञा
देने छलहुँ जे, "केओ जँ काज नहि
करऽ चाहैत अछि, तँ ओ खयबो नहि
करओ।" 11मुदा हम सभ सुनैत छी जे
अहाँ सभक बीच किछु लोक आलसीक
जीवन व्यतीत कऽ रहल अछि। ओ सभ
स्वयं काज नहि करैत अछि आ दोसराक
काज मे बाधा दैत अछि। 12एहन लोक
सभ कैं हम सभ प्रभु यीशु मसीहक नाम
सँ आज्ञा दैत छिऐक और एहि पर जोर
दऽ कऽ अनुरोध करैत छिऐक जे, ओ
सभ चुप-चाप अपन काज करओ आ
अपन कमाइक रोटी खाओ। 13और यौ
भाइ लोकनि, अहाँ सभ जे छी से सभ
भलाइक काज करऽ सँ नहि थाकू।

14जँ केओ हमरा सभक एहि पत्र मेहक
आदेशक पालन नहि करैत अछि तँ ओकरा
चिन्हू आ ओकरा सँ कोनो सम्बन्ध नहि
राखू, जाहि सँ ओ अपन आचरण-व्यवहार
सँ लज्जित होअय। 15तैयो ओकरा दुश्मन
नहि बुझिऔक, बल्कि भाय मानि कऽ
समझबिऔक-बुझबिऔक।

नमस्कार आ आशीर्वाद

16प्रभु यीशु जे शान्तिक स्रोत छथि,
स्वयं अहाँ सभ कैं सदिखन आ सभ तरहेँ
शान्ति देने रहथि। प्रभु अहाँ सभ गोटेक
संग रहथि।

17आब हम, पौलुस, ई नमस्कार अपने
हाथ सँ लिखैत छी। हमरा अपना हाथ
सँ लिखल नमस्कार सँ हमर सभ चिट्ठी
चिन्हल जा सकैत अछि। हमर अक्षर
एहने होइत अछि।

18अपना सभक प्रभु यीशु मसीहक
कृपा अहाँ सभ गोटे पर बनल रहय।

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT